गुरु की महिमा

धीरेन्द्र कुमार स्वामी
वरिष्ठ साहित्यकार
उपाध्यक्ष–संचालन समिति, श्री दादू महाविद्यालय, जयपुर

सद्गुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार।।

कहते हैं कि मनुष्य की प्रथम गुरु उसकी माता होती है, क्योंकि जन्म के बाद वही सबसे पहले उसके सम्पर्क में आती है। उसे उठना-बैठना, बोलना-चलना, खाना-पीना वही सिखाती है। माता ही बालक में आरंभिक आदतें, गुण व संस्कार विकसित करती है।

उसके पश्चात् जब बालक शाला जाता है, तब 'शिक्षागुरु' के संपर्क में आता है, जो उसे अक्षर-ज्ञान के साथ-साथ व्यवहारिक ज्ञान एवं सामाजिक शिक्षा प्रदान करता है। तीसरा गुरु वह होता है, जो जीवन को संवारने व उसे आध्यात्म की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह 'दीक्षा गुरु' या 'आध्यात्मिक गुरु' कहलाता है। ये आपको 'गुरुमंत्र' दीक्षित करते हैं, तथा यह संकल्प करवाते हैं, कि आपको जीवन में किस प्रकार का व्यवहार करना है और कैसा नहीं।

गुरु पहले मन सौं कहै, पीछे नैन की सैन।
दादू शिष्य समझै नहीं, कहि समझावै बैन।। (श्रीदादूवाणी जी)

सच्चा गुरु वस्तुतः शिष्य को घड़ता है। जिस प्रकार कुम्भकार को बर्तन घड़ते वक्त कई स्थानों पर चोटें भी लगानी पड़ती है, उसी प्रकार गुरु भी शिष्य के कुसंस्कारों को निष्कासित करने हेतु उसे थपकी लगा देता है। साथ ही स्नेह का पोषण देकर उसमें सुसंस्कारों का प्रवेश भी करवाता है। यहाँ 'शिष्य' कुम्भ होता है, और गुरु 'कुम्भकार'।

गुरु कुम्हार शिष्य कुम्भ है, गढ़ गढ़ काढ़े खोट।
भीतर हाथ सहार दे, बाहर मारे चोट।।

संतप्रवर श्री दादूजी महाराज ने अपनी 'अनुभव वाणी' में बताया है, कि गुरु किस प्रकार अपने शिष्य को निखारने के लिये अनेक प्रयत्न करता है।

सोने सेती वैर क्या, मारे घण के घाइ।
दादू काट कलंक सब, राखे कंठ लगाइ।।
पाणी मांही राखिये, कनक कलंक न जाहि।
दादू सद्गुरु पसु माणस करे, माणस थैं सिध कोई।
दादू सिध थैं देवता, देव निरंजन होई।।

गुरु का आदेश होता है, कि तुम ऊपर की ओर उठने के लिये ही पैदा हुए हो नीचे की ओर जाने के लिये नहीं। अर्थात् छोटी-छोटी व ओछी बातें न सोचकर 'उन्नत लक्ष्य' की ओर बढ़ने की सोचो। जीवन में बाधायें तो आती रहेंगी, उनसे डरने की आवश्यकता नहीं है।

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
सीस दिये जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।

गुरु की यह विशेषता होती है, कि जो हमारे भीतर बीज रूप में रहता है, उसी को विकसित एवं पल्लवित करने में वह सहायक होता है। आपके भीतर की मंद सुगन्ध भी बाहर निकालता है। सद्गुरु का हृदय वज्र से भी अधिक कठोर एवं पुष्प से भी ज्यादा कोमल होता है। वे अपने शिष्य को बताते हैं, कि कभी ओछी बात मत सोचो, केवल उन्नत लक्ष्य की ओर अग्रसर होने की सोचो। बाधाओं से हताश न हो, बल्कि धैर्य एवं अपनी कुशलता से इन्हें प्राप्त करो। गुरु तो परमात्मा का ही स्वरूप होता है। यथाः

गुरु ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म, तस्मै श्री गुरवै नमः।।

सद्गुरु की महिमा अनंत है। अगर उनकी कृपा हो जाये तो बिना ग्रंथ पढ़े ही पंडित बन जाते हैं। परन्तु अगर आप सांसारिक भोग-विषयों में लिप्त रहते हैं, तो सद्गुरु भी कुछ नहीं कर सकते। दादूवाणी में कहा है-

वैद्य बिचारा क्या करे, रोगी रहे न साच।
खाटा, मीठा, चरपरा, माँगे मेरा वाच।।
सद्गुरु बरजे शिष करे, क्यों कर बंचे काल।
दह दिशि देखत बह गया, पाणी फोड़ी पाल।।

आजकल अनेकों ढोंगी गुरु भी मिल जायेंगे, जो लोगों को भ्रमित करके अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। ऐसे गुरुओं के लिए दादूवाणी जी में लिखा हैः

झूँठे अंधे गुरु घणे, भरम दिढावे काम।
बंधे माया मोह से, दादू मुख में राम।।

सद्गुरु के बारे में श्री दादूवाणी में इस प्रकार बताया गया है-

सांचा सद्गुरु जे मिले, सब साज संवारे।
दादू नाव चढ़ाय कर, ले पार उतारे।।

दादू काढ़े कालमुख, अंधे लोचन देय।
दादू ऐसा गुरु मिल्या, जीव ब्रह्म कर लेय।।

भवसागर में डूबतां, सद्गुरु काढ़े आइ।
दादू खेवट गुरु मिल्या, लीये नाव चढ़ाई।।

दादू सद्गुरु अंजन बाहि कर, नैन पटल सब खोले।
बहरे कानों सुनने लागे, गूंगे मुख सूं बोले।।

जीवन में सद्गुरु से ही 'दीक्षा' लेनी चाहिये। बिना किसी सद्गुरु से दीक्षा लिये हमारा ज्ञान उसी प्रकार अधूरा रहता है, जैसे एक चैक में राशि तो करोड़ों की भरी हो, परन्तु उस पर देने वाले के हस्ताक्षर ही न हों।

हमारे यहाँ यह परम्परा रही है, कि 'गुरुपूर्णिमा' के दिन सभी अपने वर्तमान दिवंगत गुरुओं का पूजन करते हैं। पुष्पांजलि/श्रद्धांजलि अर्पित कर उनका आशीर्वाद लेते हैं। यह दिन 'महाभारत' के रचनाकार महर्षि वेदव्यास के जन्मदिन पर मनाया जाता है। परन्तु वर्तमान में यह परंपरा शनैःशनैः लुप्त होती जा रही है। क्योंकि आज के शिष्य में गुरु के प्रति सम्मान की भावना विकसित ही नहीं होती है। संत कबीर ने गुरु के बारे में लिखा हैः

कबिरा ते नर अंध हैं, गुरु को कहते और।
हरि रूठै गुरु ठौर है, गुरु रुठै नहीं ठौर।।

विषय बहुत विशाल है। जितना लिखें कम है। आशा है सभी पाठक अपने गुरुओं को नमन करते होंगे।

।।इति।।